



Kanubhai Babaldas Patel

30 Jul 1969

04:00 AM

Mahesana

Model: Web-MyKundli

Order No: 119076501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 29-30/07/1969
दिन _____: मंगल-बुधवार
जन्म समय _____: 04:00:00 घंटे
इष्ट _____: 54:38:43 घटी
स्थान _____: Mahesana
राज्य _____: Gujarat
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:37:00 उत्तर
रेखांश _____: 72:28:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:40:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 03:19:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:24 घंटे
साम्पातिक काल _____: 23:49:26 घंटे
सूर्योदय _____: 06:08:30 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:24:17 घंटे
दिनमान _____: 13:15:47 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 13:09:44 कर्क
लग्न के अंश _____: 14:04:42 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मिथुन - बुध
राशि-स्वामी _____: मकर - शनि
नक्षत्र-चरण _____: धनिष्ठा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: आयुष्मान
करण _____: कौलव
गण _____: राक्षस
योनि _____: सिंह
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: गा-गगन
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1891	श्रावण	8
पंजाबी	संवत : 2026	श्रावण	15
बंगाली	सन् : 1376	श्रावण	14
तमिल	संवत : 2026	आदी	15
केरल	कोल्लम : 1144	कर्कदम	15
नेपाली	संवत : 2026	श्रावण	15
चैत्रादि	संवत : 2026	श्रावण	शुक्ल 2
कार्तिकादि	संवत : 2026	आषाढ़	शुक्ल 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 15
तिथि समाप्ति काल _____ : 08:15:00
जन्म तिथि _____ : 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : श्रवण
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 25:39:54 घंटे
जन्म योग _____ : धनिष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : प्रीति
योग समाप्ति काल _____ : 11:06:06 घंटे
जन्म योग _____ : आयुष्मान
सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
करण समाप्ति काल _____ : 08:15:00 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 05:50:16
भभोग _____ : 53:45:33
भोग्य दशा काल _____ : मंगल 6 वर्ष 2 मा 24 दि

घात चक्र

मास _____ : वैशाख
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : मंगलवार
नक्षत्र _____ : रोहिणी
योग _____ : वैधृति
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कुम्भ
सूर्य _____ : कुम्भ
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : मीन
बुध _____ : धनु
गुरु _____ : मेष
शुक्र _____ : वृष
शनि _____ : मकर
राहु _____ : मिथुन

Dadieya occult sciences

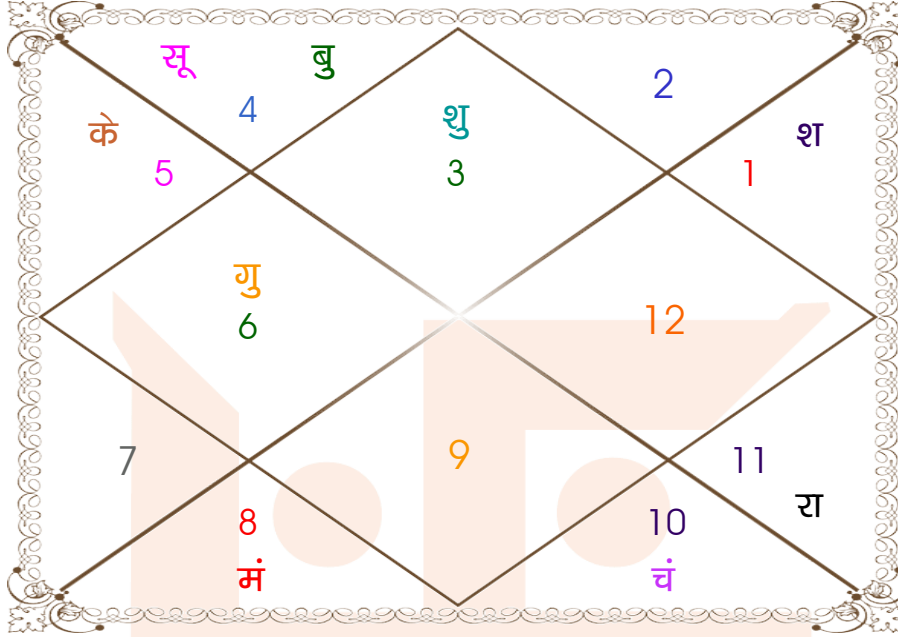
Nearby Dabchick tourist place hodal

+919468279936

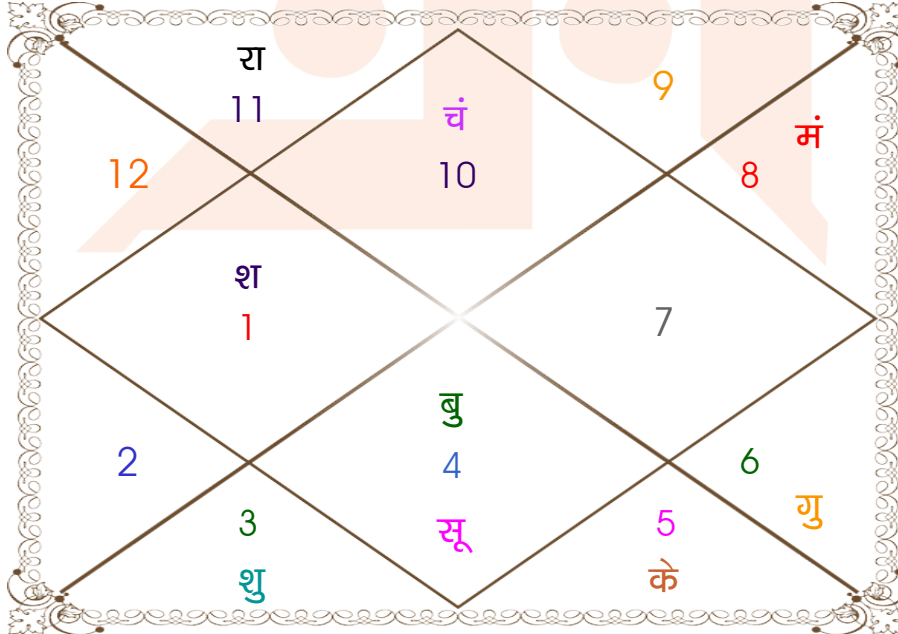
pankajkumar.dadieya@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Dadieya occult sciences

Nearby Dabchick tourist place hodal

+919468279936

pankajkumar.dadieya@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	श		ल शु
रा			बु सू
चं			के
	मं		गु

लग्न कुंडली

शु ल	श	रा
बु सू		चं
के	गु	मं

विंशोत्तरी
मंगल 6वर्ष 2मा 24दि
मंगल

30/07/1969

23/10/2088

मंगल	23/10/1975
राहु	23/10/1993
गुरु	23/10/2009
शनि	23/10/2028
बुध	23/10/2045
केतु	23/10/2052
शुक्र	23/10/2072
सूर्य	23/10/2078
चन्द्र	23/10/2088

योगिनी
पिंगला 1वर्ष 9मा 11दि
सिद्धा

11/05/2025

10/05/2032

सिद्धा	20/09/2026
संकटा	10/04/2028
मंगला	20/06/2028
पिंगला	09/11/2028
धान्या	10/06/2029
भामरी	21/03/2030
भद्रिका	11/03/2031
उल्का	10/05/2032

Dadieya occult sciences

Nearby Dabchick tourist place hodal

+919468279936

pankajkumar.dadieya@gmail.com

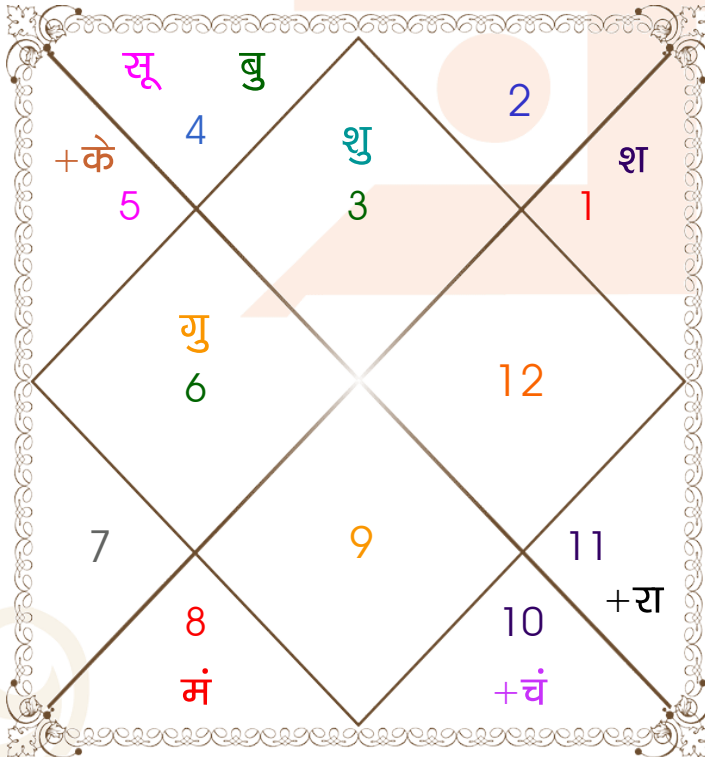
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	14:04:42	323:13:35	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	बुध	---
सूर्य			कर्क	13:09:44	00:57:21	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	राहु	मित्र राशि
चंद्र			मक	24:47:35	14:59:29	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	सम राशि
मंगल			वृश्चि	11:20:43	00:16:14	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	चंद्र	स्वराशि
बुध	अ		कर्क	21:12:50	01:58:15	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
गुरु			कन्या	08:42:45	00:09:41	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			मिथु	01:43:18	01:07:26	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	बुध	मित्र राशि
शनि			मेष	15:04:52	00:02:18	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	नीच राशि
राहु	व		कुंभ	28:28:13	00:04:41	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	28:28:13	00:04:41	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	मंगल	शत्रु राशि
हर्ष			कन्या	07:37:02	00:02:33	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	केतु	---
नेप	व		वृश्चि	02:31:37	00:00:17	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
प्लूटो			सिंह	29:48:29	00:01:39	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	राहु	---
दशम भाव			मीन	03:41:24	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	शनि	--

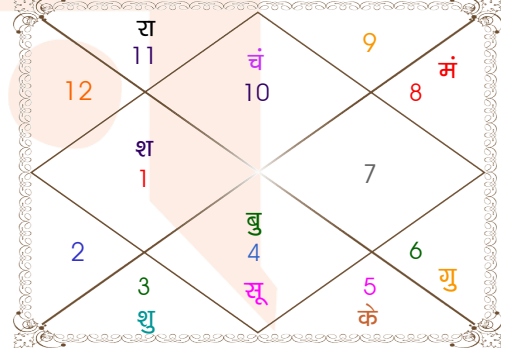
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:25:59

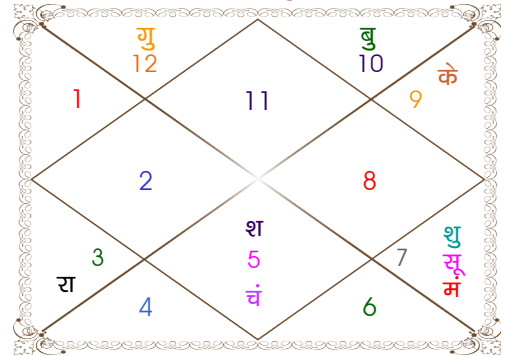
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Dadieya occult sciences

Nearby Dabchick tourist place hodal

+919468279936

pankajkumar.dadieya@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 27:20:49	मिथुन 14:04:42
2	मिथुन 27:20:49	कर्क 10:36:56
3	कर्क 23:53:03	सिंह 07:09:10
4	सिंह 20:25:17	कन्या 03:41:24
5	कन्या 20:25:17	तुला 07:09:10
6	तुला 23:53:03	वृश्चिक 10:36:56
7	वृश्चिक 27:20:49	धनु 14:04:42
8	धनु 27:20:49	मकर 10:36:56
9	मकर 23:53:03	कुम्भ 07:09:10
10	कुम्भ 20:25:17	मीन 03:41:24
11	मीन 20:25:17	मेष 07:09:10
12	मेष 23:53:03	वृष 10:36:56

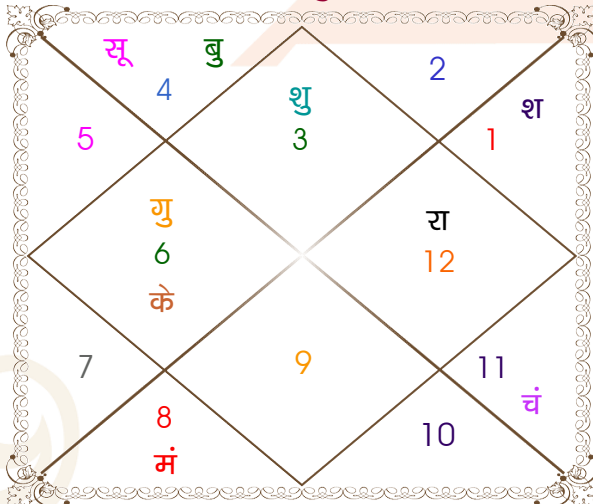
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	14:04:42
2	कर्क	07:46:03
3	सिंह	03:34:12
4	कन्या	03:41:24
5	तुला	07:50:18
6	वृश्चिक	12:21:46
7	धनु	14:04:42
8	मकर	07:46:03
9	कुम्भ	03:34:12
10	मीन	03:41:24
11	मेष	07:50:18
12	वृष	12:21:46

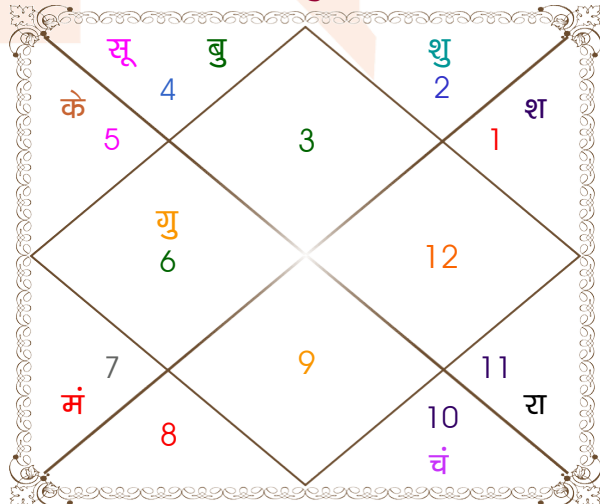
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Dadieya occult sciences

Nearby Dabchick tourist place hodal

+919468279936

pankajkumar.dadieya@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 6 वर्ष 2 मास 24 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
30/07/1969	23/10/1975	23/10/1993	23/10/2009	23/10/2028
23/10/1975	23/10/1993	23/10/2009	23/10/2028	23/10/2045
30/07/1969	राहु 06/07/1978	गुरु 11/12/1995	शनि 26/10/2012	बुध 21/03/2031
राहु 08/04/1970	गुरु 28/11/1980	शनि 23/06/1998	बुध 06/07/2015	केतु 18/03/2032
गुरु 15/03/1971	शनि 05/10/1983	बुध 28/09/2000	केतु 14/08/2016	शुक्र 16/01/2035
शनि 23/04/1972	बुध 24/04/1986	केतु 04/09/2001	शुक्र 14/10/2019	सूर्य 23/11/2035
बुध 20/04/1973	केतु 12/05/1987	शुक्र 05/05/2004	सूर्य 25/09/2020	चंद्र 23/04/2037
केतु 16/09/1973	शुक्र 12/05/1990	सूर्य 21/02/2005	चंद्र 27/04/2022	मंगल 21/04/2038
शुक्र 17/11/1974	सूर्य 06/04/1991	चंद्र 23/06/2006	मंगल 05/06/2023	राहु 07/11/2040
सूर्य 24/03/1975	चंद्र 04/10/1992	मंगल 30/05/2007	राहु 11/04/2026	गुरु 13/02/2043
चंद्र 23/10/1975	मंगल 23/10/1993	राहु 23/10/2009	गुरु 23/10/2028	शनि 23/10/2045

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
23/10/2045	23/10/2052	23/10/2072	23/10/2078	23/10/2088
23/10/2052	23/10/2072	23/10/2078	23/10/2088	00/00/0000
केतु 21/03/2046	शुक्र 22/02/2056	सूर्य 09/02/2073	चंद्र 24/08/2079	मंगल 21/03/2089
शुक्र 21/05/2047	सूर्य 21/02/2057	चंद्र 11/08/2073	मंगल 24/03/2080	राहु 30/07/2089
सूर्य 26/09/2047	चंद्र 23/10/2058	मंगल 17/12/2073	राहु 23/09/2081	00/00/0000
चंद्र 26/04/2048	मंगल 23/12/2059	राहु 11/11/2074	गुरु 23/01/2083	00/00/0000
मंगल 22/09/2048	राहु 23/12/2062	गुरु 30/08/2075	शनि 23/08/2084	00/00/0000
राहु 11/10/2049	गुरु 23/08/2065	शनि 11/08/2076	बुध 22/01/2086	00/00/0000
गुरु 17/09/2050	शनि 23/10/2068	बुध 17/06/2077	केतु 23/08/2086	00/00/0000
शनि 27/10/2051	बुध 24/08/2071	केतु 23/10/2077	शुक्र 23/04/2088	00/00/0000
बुध 23/10/2052	केतु 23/10/2072	शुक्र 23/10/2078	सूर्य 23/10/2088	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 6 वर्ष 2 मा 26 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Dadieya occult sciences

Nearby Dabchick tourist place hodal

+919468279936

pankajkumar.dadieya@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु 05/06/2023 11/04/2026	शनि - गुरु 11/04/2026 23/10/2028	बुध - बुध 23/10/2028 21/03/2031	बुध - केतु 21/03/2031 18/03/2032	बुध - शुक्र 18/03/2032 16/01/2035
राहु 09/11/2023 गुरु 26/03/2024 शनि 07/09/2024 बुध 02/02/2025 केतु 03/04/2025 शुक्र 24/09/2025 सूर्य 15/11/2025 चंद्र 10/02/2026 मंगल 11/04/2026	गुरु 13/08/2026 शनि 06/01/2027 बुध 17/05/2027 केतु 10/07/2027 शुक्र 12/12/2027 सूर्य 27/01/2028 चंद्र 13/04/2028 मंगल 06/06/2028 राहु 23/10/2028	बुध 24/02/2029 केतु 17/04/2029 शुक्र 10/09/2029 सूर्य 24/10/2029 चंद्र 06/01/2030 मंगल 26/02/2030 राहु 08/07/2030 गुरु 02/11/2030 शनि 21/03/2031	केतु 12/04/2031 शुक्र 11/06/2031 सूर्य 29/06/2031 चंद्र 29/07/2031 मंगल 19/08/2031 राहु 13/10/2031 गुरु 30/11/2031 शनि 26/01/2032 बुध 18/03/2032	शुक्र 06/09/2032 सूर्य 28/10/2032 चंद्र 22/01/2033 मंगल 23/03/2033 राहु 26/08/2033 गुरु 11/01/2034 शनि 23/06/2034 बुध 17/11/2034 केतु 16/01/2035
बुध - सूर्य 16/01/2035 23/11/2035	बुध - चंद्र 23/11/2035 23/04/2037	बुध - मंगल 23/04/2037 21/04/2038	बुध - राहु 21/04/2038 07/11/2040	बुध - गुरु 07/11/2040 13/02/2043
सूर्य 01/02/2035 चंद्र 27/02/2035 मंगल 17/03/2035 राहु 03/05/2035 गुरु 13/06/2035 शनि 01/08/2035 बुध 14/09/2035 केतु 02/10/2035 शुक्र 23/11/2035	चंद्र 05/01/2036 मंगल 04/02/2036 राहु 22/04/2036 गुरु 30/06/2036 शनि 20/09/2036 बुध 02/12/2036 केतु 01/01/2037 शुक्र 28/03/2037 सूर्य 23/04/2037	मंगल 14/05/2037 राहु 08/07/2037 गुरु 25/08/2037 शनि 21/10/2037 बुध 12/12/2037 केतु 02/01/2038 शुक्र 03/03/2038 सूर्य 21/03/2038 चंद्र 21/04/2038	राहु 07/09/2038 गुरु 09/01/2039 शनि 06/06/2039 बुध 16/10/2039 केतु 09/12/2039 शुक्र 12/05/2040 सूर्य 28/06/2040 चंद्र 14/09/2040 मंगल 07/11/2040	गुरु 25/02/2041 शनि 06/07/2041 बुध 01/11/2041 केतु 19/12/2041 शुक्र 06/05/2042 सूर्य 16/06/2042 चंद्र 24/08/2042 मंगल 12/10/2042 राहु 13/02/2043
बुध - शनि 13/02/2043 23/10/2045	केतु - केतु 23/10/2045 21/03/2046	केतु - शुक्र 21/03/2046 21/05/2047	केतु - सूर्य 21/05/2047 26/09/2047	केतु - चंद्र 26/09/2047 26/04/2048
शनि 19/07/2043 बुध 05/12/2043 केतु 31/01/2044 शुक्र 13/07/2044 सूर्य 31/08/2044 चंद्र 21/11/2044 मंगल 17/01/2045 राहु 14/06/2045 गुरु 23/10/2045	केतु 01/11/2045 शुक्र 26/11/2045 सूर्य 03/12/2045 चंद्र 15/12/2045 मंगल 24/12/2045 राहु 16/01/2046 गुरु 04/02/2046 शनि 28/02/2046 बुध 21/03/2046	शुक्र 31/05/2046 सूर्य 21/06/2046 चंद्र 27/07/2046 मंगल 21/08/2046 राहु 24/10/2046 गुरु 20/12/2046 शनि 25/02/2047 बुध 26/04/2047 केतु 21/05/2047	सूर्य 28/05/2047 चंद्र 07/06/2047 मंगल 15/06/2047 राहु 04/07/2047 गुरु 21/07/2047 शनि 10/08/2047 बुध 28/08/2047 केतु 05/09/2047 शुक्र 26/09/2047	चंद्र 14/10/2047 मंगल 26/10/2047 राहु 27/11/2047 गुरु 26/12/2047 शनि 28/01/2048 बुध 28/02/2048 केतु 11/03/2048 शुक्र 16/04/2048 सूर्य 26/04/2048

Dadieya occult sciences

Nearby Dabchick tourist place hodal

+919468279936

pankajkumar.dadieya@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

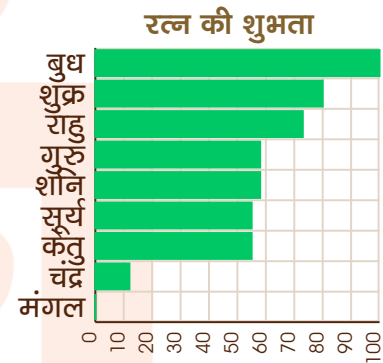
मूलांक	3
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 8
शत्रु अंक	1, 4,
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	धन, स्वास्थ्य, सुख
हीरा	शुक्र	80%	स्वास्थ्य, कम खर्च, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	73%	भाग्योदय, धनार्जन
पुखराज	गुरु	58%	सुख, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	58%	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	55%	धन, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	55%	पराक्रम, धन
मोती	चंद्र	12%	दुर्घटना, धन हानि
मूंगा	मंगल	0%	शत्रु व रोग, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	23/10/1975	61%	25%	21%	88%	64%	80%	58%	61%	61%
राहु	23/10/1993	34%	0%	0%	100%	58%	86%	64%	86%	34%
गुरु	23/10/2009	61%	25%	9%	88%	70%	67%	58%	73%	55%
शनि	23/10/2028	34%	0%	0%	100%	58%	86%	70%	80%	34%
बुध	23/10/2045	61%	0%	0%	100%	58%	86%	58%	73%	55%
केतु	23/10/2052	34%	0%	9%	100%	58%	86%	41%	61%	67%
शुक्र	23/10/2072	34%	0%	0%	100%	58%	92%	64%	80%	61%
सूर्य	23/10/2078	67%	25%	9%	100%	64%	67%	41%	61%	34%
चंद्र	23/10/2088	61%	38%	0%	100%	58%	80%	58%	61%	34%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/07/1969-28/04/1971	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

फल

सम
सम
शुभ
सम
शुभ

क्षेत्र

अल्प बचत
पराक्रम हानि
दम्पति
दुर्घटना से बचाव
भाग्योदय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। षष्ठ भाव शत्रु रोग, ऋण आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी पुरुष होंगे तथा शत्रु वर्ग को पराजित करने में समर्थ रहेंगे साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा तथा सामान्यतया आप स्वस्थ ही रहेंगे। आप पराकमी एवं कठोर कार्यों को करने में रुचिशील रहेंगे। अतः आप पुलिस सेना या अन्य पराकमी विभागों में कार्यरत भी हो सकते हैं। जीवन में आपको ऋण अल्प मात्रा में ही लेना पड़ेगा तथा यदि लेना भी पड़ा तो आप इसे वापस देने में समर्थ रहेंगे जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आप धर्म या धार्मिक कार्यों पर अल्प मात्रा में ही रुचि रखेंगे साथ ही भाग्य की अपेक्षा आप कर्म पर अधिक विश्वास करेंगे। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्य बल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कार्य करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा। साथ ही यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति करेंगे लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने कार्यों को उत्साह पराकम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगे।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगे तथा अपने परिवार का आधुनिक परिवेश में

लालन पालन करने में समर्थ होंगे जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा पारिवारिक जनों से आप पूर्ण सहयोग सुख एवं सम्मान प्राप्त होगा। अतः आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



Dadieya occult sciences

Nearby Dabchick tourist place hodal

+919468279936

pankajkumar.dadieya@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान

दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकारस्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वाला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, कोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संधी, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(23/10/2009 - 23/10/2028)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपके जीवन में यह 23/10/2009 को आरम्भ और 23/10/2028 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 11वें भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो अधिकांश लोगों में आतंक उत्पन्न करता है। हर क्षेत्र में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करना इसकी प्रवृत्ति है। यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 11वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि प्रथम, पंचम तथा अष्टम भावों पर है और यह उनके कार्य को सम्पादित कर रहा है। 11वा भाव, जिसमें यह स्थित है, मित्र, समुदाय, महत्वाकांक्षाओं, कामनाओं तथा उनकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, लाभ, खुशहाली, बड़े भाई, भाग्योदय आदि का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी 11वें भाव में स्थित है और अपने भाव अर्थात् कामनाओं इच्छाओं की पूर्ति के भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको किसी गम्भीर बीमारी अथवा दुर्घटना नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि की वर्तमानों दशा में आपकी इच्छाओं की पूर्ति, लाभ और धन का संग्रह होगा। आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा और जीवन के हर क्षेत्र में लाभ मिलेगा। किन्तु, आपके लक्ष्यों की पूर्ति में बाधाएं भी उत्पन्न करेगा जिन पर आप अपने भाइयों तथा मित्रों की सहायता से विजय प्राप्त करेंगे।

व्यवसाय :

आप व्यवसाय में सफल होंगे और सरकारी स्रोतों से धन का उपार्जन करेंगे। आपके राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने की अच्छी सम्भावना है जहाँ आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और पारिवारिक सुख-आनन्द का लाभ उठाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्च कम होंगे जो आज्ञाकारी होंगे और आपका आदर करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा के लिए यह दशा अनुकूल है। आप अपनी शिक्षा सफलता पूर्वक पूरी करेंगे और साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेंगे।



Dadieya occult sciences

Nearby Dabchick tourist place hodal

+919468279936

pankajkumar.dadieya@gmail.com

महादशा :- बुध
(23/10/2028 - 23/10/2045)

बुध की महादशा 23/10/2028 आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 23/10/2045 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध द्वितीय भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि अष्टम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन-वृत्ति में उन्नति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान आपको धन-समृद्धि, परिवार के सुख, यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, स्फूर्तिवान तथा उत्साह से भरे रहेंगे। संक्रामक बीमारी, ज्वर, गले की समस्या, ब्रोंकाइटिस, स्नायविक समस्या, गठिया आदि मौसमी बीमारियों को छोड़कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अपने स्वास्थ्य के रखरखाव के लिये आपको अधिक मानसिक तथा शारिरिक श्रम से बचना चाहिए।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपका धन-संग्रह होगा। अष्टम भाव पर बुध की दृष्टि के कारण आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी होगी। आपको सट्टे तथा निवेश में लाभ मिलेगा। अर्थिक दृष्टि से यह दशा अति उत्तम होगी। जीविका के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, वैमानिकी, अन्तरिक्ष अनुसन्धान अन्य सभी बौद्धिक कार्य का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर एवं हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि, पदोन्नति तथा यात्रा होगी। आपको आपके उच्चाधिकारियों का सदभाव प्राप्त होगा और आप अपनी सामर्थ्य के कारण पहचाने जायेंगे। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के व्यापार में शुभ परिवर्तन होगा। आपकी आय तथा लाभ अच्छा होगा। आपके कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। आर्थिक और जीवन-वृत्ति की दृष्टि से यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप नया वाहन प्राप्त कर सकते हैं। आपको जीवन का सारा सुख मिलेगा। आपको माता से लाभ मिलेगा। इस दशा के दौरान भवन की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति का लेन-देन बहुत लाभदायक होगा और जमीन-जायदाद से लाभ मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी तथा मंगल की अन्तर्दशा के दौरान लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक वृत्ति नयी ऊँचाइयों को छूएगी। आप परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में सफल होंगे, जिससे लोगों के बीच जाने जाएंगे। गणित, लेखा, वाणिज्य, विज्ञान तथा साहित्य में आपकी रुची होगी। आप ललितकला तथा उन सभी कार्यों में कुशल होंगे जिनके कारण मनुष्य बुद्धिमान और बहुमुखी होता है और विभिन्न विषयों में उसकी रुचि होती है। आपमें भाषण-क्षमता विद्यमान है।

परिवार :

आपको आपके बच्चों से अपार सुख मिलेगा या आपके परिवार में किसी शिशु का जन्म हो सकता है। आपके जीवन साथी के कार्य-क्षेत्र में शुभ परिवर्तन हो सकता है। उन्हें अचानक धन-लाभ मिलेगा तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी और स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को लाभ होगा, उनकी मनोकामनाएं पूरी होंगी तथा उनके अच्छे मित्र होंगे जबकि आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, विरोधियों पर विजय मिलेगी और शासन से लाभ मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों का दान-पुण्य आदि शुभ कार्यों पर व्यय होगा, उनकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी और सफलता मिलेगी। आपके बड़े भाई-बहनों को सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, उनका माता के साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा और उनके मित्र होंगे। आपके अनेक मित्र होंगे, पारिवारिक सुख मिलेगा और रत्नों तथा अच्छे कपड़ों की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी शिक्षा उत्तम होगी, पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा कुछ मानसिक तनाव दे सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यश, ख्याति और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सूर्य की अन्तर्दशा के कारण सुख तथा समृद्धि में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा होंगी जबकि मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यात्रा और व्यय होगा। इसके बाद राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न होंगी जबकि गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप समृद्धि, सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति और जीविका में उन्नति होगी।

**अंतर्दशा :- बुध - बुध
(23/10/2028 - 21/03/2031)**

आपके लिए बुध की महादशा 23/10/2028 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 23/10/2028 को प्रारंभ होकर 21/03/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में धनार्जन उत्तम होगा, भरोसेमंद मित्र बनेंगे। आपका व्यक्तित्व निखरेगा। बुद्धि के बल पर धन कमाएंगे। परिवार के सदस्यों का पालन करेंगे। उत्तम वस्त्र उपलब्ध होंगे। लेखन, यात्रा, विज्ञापन और प्रकाशन से धनलाभ संभव है। किसी दस्तावेज पर सोच-समझकर ही हस्ताक्षर करें। सफलता, प्रसन्नता और उच्चाधिकारियों द्वारा सहयोग का संकेत है। विरासत या अप्रत्याशित स्थान से धन मिल सकता है। कार्यक्षमता उत्तम रहेगी।

आपके जीवनसाथी को उच्चपद प्राप्त होगा। आपके पिता स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेंगे। माता को विभिन्न माध्यमों से धन मिलेगा।

आपके भाई-बहनों के लिए शिक्षा और कार्यक्षेत्र में बाधा, बहुत से मित्र, भूमि के स्वामित्व, वाहन और माता से प्रसन्नता का योग है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो यात्राएं होंगी, अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा; कार्य में भी उत्तम धनार्जन होगा। व्यापारी धन कमाएंगे; उच्च पद प्राप्त करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मामूली वायुविकार हो सकता है। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।